(ख) जानकारी निम्न प्रकार है :—

राज्य का नाम	कर्मचारी	पौध रक्षा सामग्री (संख्या)		कीट-नाशी औषधियां (मूल्य)
		मशीनें	यानें	
१. मैसूर (धारवाड़)	१०	३३०	२	२०,००० रुपये प्रति वर्ष
२. महाराष्ट्र (अमरावती)	५	३१६	२	,, ,, ,,
३. उड़ीसा (कटक)	६	१८६	२	,, ,, ,,
४. पंजाब (पठानकोट) . .	६	३००	१	,, ,, ,,

दिल्ली के अस्पतालों में असाध्य रोगी

३५३५. श्री म० ला० द्विवेदी : क्या **स्वास्थ्य** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) पिछले छः महीनों में दिल्ली में केन्द्रीय सरकार के अस्पतालों में ऐसे बीमारों की संख्या कितनी है जिनके बारे में काफी दिन के इलाज के बाद यह घोषित कर दिया गया कि उनका रोग असाध्य है;

(ख) क्या सरकार ऐसे बीमारों को बाहर के अस्पतालों में भेजने की व्यवस्था करती है; और

(ग) यदि नहीं, तो ऐसे बीमारों की चिकित्सा का क्या प्रबन्ध किया जा रहा है ?

स्वास्थ्य मंत्री (श्री करमरकर) : (क) आम तौर पर रोगियों के अस्पताल से मुक्त होने के समय किसी रोगी को असाध्य घोषित नहीं किया जाता तथापि कैंसर, हृद्‌रोग, जीर्ण किडनी, लीवर रोग तथा शरीर के अन्य भागों के दर्द जैसी अनेक अवस्थाओं में रोग कभी-कभी इतना प्रगत हो जाता है कि विभिन्न अवयवों में अत्यधिक क्षति हो जाने से उसका इलाज सम्भव नहीं रह जाता । ऐसे जीर्ण रोगों के रोगियों की क्लिनिकी अवस्था स्थिर नहीं रहती अपितु उसमें परिवर्तन होता रहता है जिससे कभी तो स्थिति बिगड़ जाती है और कभी कुछ 'सुधार' की हालत में व्यवस्थित सी हो जाती है । जहां स्थिति में ऐसा कुछ सुधार आदि की अवस्था आ जाती है उसे फिर अस्पताल में रखने तथा उसका और आगे इलाज करने का विशेष कोई असर नहीं पड़ता और तब रोगी को आमतौर पर पर्याप्त रूप से ऐसा इलाज कर कि वह उसी सुधार की स्थिति में रह सके और अपने घर में ही छोटा मोटा इलाज करवाता रहे, मुक्त कर दिया जाता है । किन्तु स्थिति के बिगड़ जाने की नौबत में, जहां उसके दुबारा अस्पताल में भरती करने की आवश्यकता हो, उसे दुबारा भरती कर दिया जाता है और जो कुछ हलका-फुलका इलाज बतलाया जाता है वह किया जाता है ।

(ख) और (ग). विशेष मामलों, जहां कतिपय एककों में न्यूरो-सर्जरी आदि की उत्तम शल्य-क्रिया-सुविधायें तथा अन्य साधन उपलब्ध हैं, रोगियों को एक अस्पताल से दूसरे ऐसे अस्पताल में जहां अच्छी सुविधायें उपलब्ध हों, भेज दिया जाता है । मानसिक रोगियों के अलावा दूसरे रोगियों को दिल्ली से बाहर के अन्य अस्पतालों में भेजना आम तौर पर आवश्यक नहीं समझा जाता क्योंकि देश के अन्य भागों में उपलब्ध बहुत सी सुविधायें दिल्ली के अस्पतालों में भी उपलब्ध हैं ।